एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जैविक खेती

(*शिशपाल कांटवा[1], मुकेश जाखड[2] एवं नरेन्द्र पादरा[1])
[1]सैम हिग्गिनबोटोम कृषि प्रोधोगिकी एवं विज्ञान विश्वविधालय, प्रयागराज
[2]राजा बलवंत सिंह कृषि महाविधालय बिचपुरी, आगरा
* shishpalkantwa08@gmail.com

जैविक खेती एक उत्पादन प्रणाली है जो कृत्रिम रूप से मिश्रित उर्वरकों, कीटनाशकों, विकास नियामकों, आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों और पशुधन खाद्य योजकों के उपयोग से बचाती है या बड़े पैमाने पर बाहर करती है। अधिकतम संभव सीमा तक जैविक खेती प्रणाली फसल चक्रों, फसल अवशेषों के उपयोग, पशु खाद, फलियां, हरी खाद, गैर-कृषि जैविक कचरे, जैव उर्वरक, यांत्रिक खेती, खनिज युक्त चट्टानों और मिट्टी के उत्पाद को बनाए रखने के लिए जैविक नियंत्रण के पहलुओं पर निर्भर करती है।

अपनी फसलों के उत्पादन के लिए किसान रसायनिक खाद, जहरीले कीटनाश पदार्थो का उपयोग करने लगे है, जो कि इंसानों के स्वास्थ और मिट्टी दोनों के लिए हानीकारक है .इसी के साथ साथ वातावरण भी प्रदूषित होता जा रहा है.इन सभी चीजों को रोकने के लिए यदि किसान रसायनिक तरीको की जगह कृषि के जैविक तरीको का उपयोग करे, तो इन समस्याओ पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

जैविक खेती के तरीके

फसल विविधता:- जैविक खेती मे फसल विविधता को प्रोत्साहित किया जाता है, जिसके अनुसार एक ही जगह पर कई फसलों का उत्पादन किया जाता है।

मृदा प्रबंधन:- मृदा प्रबंधन भूमि प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसके प्रयोग से हम भूमि की गुणवत्ता बढ़ा सकते है .इसे करने के लिए हमे मिट्टी के प्रकार और मिट्टी की विशेषताओ पर ध्यान देना आवश्यक है।

खरपतवार प्रबंधन:- खरपतवार मतलब अनावश्यक वनस्पति जो कि फसलों या पोधों के मध्य मे अपने आप उग आति है और फसलों को मिलने वाले पोषण को स्वयं उपयोग करती है, जिसका निपटारा भी जैविक खेती मे किया जाता है।

जैविक खेती के लाभ

1. यह प्रदूषण के स्तर को कम करके पर्यावरण के स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है।
2. यह उत्पाद में अवशेषों के स्तर को कम करके मानव और पशु स्वास्थ्य खतरों को कम करता है।
3. यह कृषि उत्पादन को स्थायी स्तर पर रखने में मदद करता है।
4. यह कृषि उत्पादन की लागत को कम करता है और मिट्टी के

स्वास्थ्य में भी सुधार करता है।

5. यह अल्पकालिक लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करता है और भविष्य की पीढ़ी के लिए उन्हें संरक्षित करने में मदद करता है।
6. यह न केवल पशु और मशीन दोनों के लिए ऊर्जा बचाता है, बल्कि फसल खराब होने के जोखिम को भी कम करता है।
7. यह मिट्टी के भौतिक गुणों जैसे दानेदार बनाना, अच्छी जुताई, अच्छा वातन, आसान जड़ पैठ में सुधार करता है और जल धारण क्षमता में सुधार करता है और कटाव को कम करता है।
8. यह मिट्टी के रासायनिक गुणों में सुधार करता है जैसे कि मिट्टी के पोषक तत्वों की आपूर्ति और प्रतिधारण, जल निकायों और पर्यावरण में पोषक तत्वों की हानि को कम करता है और अनुकूल रासायनिक प्रतिक्रियाओं को बढ़ावा देता है।

पर्यावरण के लिए जैविक खेती का लाभ

1. भूमि का जलस्तर तो बढ़ता ही है, साथ ही साथ रसायनिक चीजों के प्रयोग को रोकने से मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन मे पानी से होने वाले प्रदूषण मे भी कमि आति है।
2. पशुओ का गोबर और कचरे का प्रयोग खाद बनाने मे करने से प्रदूषण मे कमि आति है और इसके कारण होने वाले मच्छर और अन्य गंदगी कम होती है, जिससे बीमारियो की रोकथाम होती है।
3. अगर अंतरराष्ट्रीय बाजार को देखा जाए, तो वहा भी जैविक खेती के द्वारा उतापादित हुये पदार्थो की ज्यादा माँग है।

जैविक खेती की सीमाएं और निहितार्थ

1. जैविक खाद प्रचुर मात्रा में उपलब्ध नहीं है और पौधों के पोषक तत्वों के आधार पर यह रासायनिक उर्वरकों की तुलना में अधिक महंगा हो सकता है यदि जैविक आदानों को खरीदा जाता है।
2. जैविक खेती में उत्पादन विशेष रूप से पहले कुछ वर्षों के दौरान कम हो जाता है, इसलिए किसान को जैविक उत्पादों के लिए प्रीमियम मूल्य दिया जाना चाहिए।
3. जैविक उत्पादन, प्रसंस्करण, परिवहन और प्रमाणन आदि के दिशा-निर्देश आम भारतीय किसान की समझ से परे हैं।

E-Magazine for Agricultural Articles
(www.agriarticles.com)